प्र० अर्थशास्त्री - IInd yr

प्र०- जोतों के उपविभाजन तथा अपखण्डन के कारण :→ अर्थशास्त्री IInd y

भारत में जोतों के उपविभाजन तथा अपखण्डन के बहुत से कारण उत्तरदायी हैं — ① उत्तराधिकार सम्बन्धी कानून :— भारत में जोतों के उपविभाजन तथा अपखण्डन का सबसे प्रमुख कारण 'उत्तराधिकारी सम्बन्धी कानून' है। हिन्दू परिवारों में पिता की सम्पत्ति पर प्रत्येक पुत्र एवं पुत्री को समान अधिकार रहता है, मुसलमान परिवारों में भी पिता की सम्पत्ति के हकदार पुत्र एवं पुत्रियाँ दोनों होते हैं। इस प्रकार पिता की सम्पत्ति का जब उत्तराधिकारियों के बीच बंटवारा होता है तो भूमि का उपविभाजन होता चला जाता है। बंटवारे के समय प्रत्येक उत्तराधिकारी भूमि की स्थिति एवं उर्वरता को देखते हुए हर प्रकार के भूमि का एक अंश लेना चाहता है, जिसके चलते उपविभाजन के साथ भूमि का अपखण्डन भी होता है। ② जनसंख्या में वृद्धि :- विदित है कि भारत की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है, लेकिन भूमि की मात्रा स्थिर है क्योंकि बढ़ी हुई जनसंख्या का अधिकांश भार कृषि पर पड़ता है परिणामस्वरूप भूमि का उपविभाजन एवं अपखण्डन होते चला जा रहा है। ③ संयुक्त परिवार प्रथा का विघटन :— पहले भारत में मुख्यत: संयुक्त परिवार की व्यवस्था थी, लेकिन व्यक्तिवादी भावना के विकास के साथ-साथ अब 'संयुक्त परिवार' टूटते जा रहे हैं, अत: संयुक्त परिवार के विघटन के साथ पैतृक सम्पत्ति का विभाजन होते चला जा रहा है जिससे भूमि का उपविभाजन एवं अपखण्डन हो रहा है। ④ भूसम्पत्ति के प्रति विशेष दृष्टिकोण :→ भारत में लोगों के बीच भूसम्पत्ति के प्रति विशेष आकर्षण पाया जाता है, जहाँ भूसम्पत्ति का अर्जन सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है, भारतीय किसान 'उत्तम खेती' एवं 'मध्यम बान' की कहावत में विश्वास करते हैं दूसरी बात भारत में भूमि को सर्वोत्तम सम्पत्ति समझा जाता है यदि लोग अपनी आय में जो बचत करते हैं, उस पैसा को जमीन खरीदने में लगा देते हैं जिससे उपविभाजन एवं अपखण्डन को प्रोत्साहन मिलता है। ⑤ व्यक्तिवादी भावना का विकास :— सभ्यता के विकास एवं भौतिक विकास के साथ-साथ लोगों में व्यक्तिवादी भावना बढ़ती जा रही है वे अपने परिवारों के साथ अलग रहना चाहते हैं, जिसके चलते सम्पत्ति एवं भूमि का बंटवारा होता है फलत: भूमि के उपविभाजन एवं अपखण्डन को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा गृह उद्योगों का ह्रास, किसानों की ऋणग्रस्तता, एवं किसानों की अज्ञानता के चलते, भारत में उपविभाजन एवं अपखण्डन की समस्या बढ़ती जा रही है।

उपर्युक्त कारणों से भारत में जोतों का उपविभाजन एवं अपखण्डन होता है जिसके अनेक बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं। —— x —— x —— x

शास्त्री-III. भारत के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषताएं   शास्त्री-IInd
19|06|21 [redacted]

भारत के विदेशी व्यापार की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं :- ① व्यापार सन्तुलन का प्रतिकूल होना।— द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले भारत का विदेशी व्यापार अनुकूल रहता था, लेकिन युद्ध के बाद खासकर योजनाकाल में भारत का व्यापार सन्तुलन प्रायः प्रतिकूल ही रहा। 1972-73 एवं 1976-77 तक भारत का विदेशी व्यापार अनुकूल रहा। यद्यपि कुछ वर्षों से व्यापार सन्तुलन की प्रतिकूलता में कमी आई है। भारत सरकार ने व्यापार सन्तुलन की प्रतिकूलता को रोकने के लिये आयात-नियन्त्रण, निर्यात प्रोत्साहन, कच्चे पदार्थों एवं खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि जैसे कदम के लिए आवश्यक कदम उठाये। ② विदेशी व्यापार के मूल्य तथा मात्रा में वृद्धि।— स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के विदेशी व्यापार के मूल्य तथा मात्रा में तेजी से वृद्धि हुई है। ③ विदेशी व्यापार की दिशा में परिवर्तन।— पिछले कुछ वर्षों में भारत के विदेशी व्यापार की दिशा में बहुत कुछ परिवर्तन हुए हैं। भारत के आयात की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इसके साथ-साथ भारत के निर्यात की दिशा में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। 1976-77 में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा ग्राहक बन गया। जबकि हमारे कुल निर्यात में उसका योगदान 11 प्रतिशत हो गया। इसके बाद जापान का 10.9 प्रतिशत, सोवियत रूस 8.8 प्रतिशत का स्थान आता है। भारत के अन्य प्रमुख ग्राहक फ्रांस, जर्मनी, इटली, बंगलादेश, सिंगापुर, ईराक तथा ईरान हैं। पिछले वर्षों से भारत के निर्यात की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। भारत के निर्यातकों में प्रथम स्थान EEC का, दूसरा स्थान उत्तरी अमेरिका के देशों का तथा तीसरा स्थान पूर्वी यूरोप के देशों का था। ④ विदेशी व्यापार के संरचना में परिवर्तन — भारत के विदेशी व्यापार की संरचना में भी व्यापक परिवर्तन हुए हैं। खास करके आयात की संरचना में काफी परिवर्तन हुए हैं। भारत विदेशों से मुख्यतः तीन प्रकार की वस्तुओं का आयात करता है — पूंजीगत वस्तुएं (मशीन, औजार इत्यादि), कच्चे पदार्थ तथा उपभोक्ता वस्तुएं। योजनाकाल में पूंजीगत वस्तुएं तथा कच्चे पदार्थों के आयात में कमी एवं उपभोग वस्तु के आयात में बहुत कमी आयी है। यह देश के बढ़ते हुए औद्योगीकरण का सूचक है। जबकि हाल के वर्षों में पेट्रोलियम तथा पेट्रोलियम पदार्थ के आयात में काफी वृद्धि हुई है। इसके साथ-साथ निर्यात की संरचना में भी काफी परिवर्तन हुआ। देश विभाजन से पहले भारत जूट, कपास एवं कुछ खाद्यान्नों का निर्यात करता था लेकिन देश के विभाजन के फलस्वरूप वह इन वस्तुओं का आयात करने लगा। भारत के परम्परागत निर्यातों में चाय, कपड़ा, जूट, मसाले, तम्बाकू इत्यादि प्रमुख हैं। योजनाकाल में भारत के बढ़ते हुए औद्योगीकरण के कारण इन्जीनियरिंग वस्तुएं, रसायन, हस्तशिल्प, लोहा, इस्पात जैसी वस्तु के निर्यात में काफी वृद्धि हो गई है। ⑤ विदेशी व्यापार पर सरकारी नियन्त्रण में वृद्धि।— ~~भारत के~~ योजनाकाल में भारत के विदेशी व्यापार पर सरकारी नियन्त्रण में वृद्धि हुई है। इसका प्रमुख कारण देश के सामने विदेशी विनिमय की कमी रही है जिसे दूर करने के लिए सरकार को आयात नियन्त्रण एवं निर्यात प्रोत्साहन का सहारा लेना पड़ा। — x — x —

Bhawan
19/06/21

R.U.S. College Sukhdena Purhea. x — Bhawan

[redacted]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर मालथस ने यह निष्कर्ष निकाला कि जनसंख्या एवं खाद्यसामग्री में असंतुलन बढ़ता जाता है। अतएव यदि मनुष्य बढ़ती हुई जनसंख्या को ब्रह्मचर्य, संयम, तथा अन्य कृत्रिम उपायों के द्वारा रोकने का प्रयास नहीं करेगा, तो बीमारी, महामारी, भूकम्प, अकाल आदि प्राकृतिक उपायों द्वारा अधिक जनसंख्या स्वतः नष्ट हो जायेगी। इस प्रकार जनसंख्या में जीवन निर्वाह के साधनों की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है। मालथस अपने सिद्धान्त को समझाने के लिए गणित की सहायता लिया। इनके अनुसार यदि जनसंख्या की वृद्धि को किसी प्रकार की रुकावट न हो तो किसी देश की जनसंख्या ज्यामितीय दर तथा खाद्य सामग्री अंकगणितीय रीति के अनुसार बढ़ती है। (By nature, human food increases in a slow arithmetical ratio, man himself increases in a quick Geometrical ratio, unless want and vice stop him) इस प्रकार मालथस ने जनसंख्या के संबंध में एक निराशावादी दृष्टिकोण विश्व के समक्ष रखा। उसने आगे यह भी बताया कि बढ़ती हुई जनसंख्या को रोका नहीं जाए तो विश्व के समक्ष बहुत सारी कठिनाईयाँ उपस्थित हो जायेंगी। इनके अनुसार बढ़ती हुई जनसंख्या को दो तरीकों से रोका जा सकता है:- (I) कृत्रिम अवरोध (Preventive checks) (II) प्राकृतिक अवरोध (Positive checks)

कृत्रिम अवरोध: → इन कृत्रिम अवरोध के अन्तर्गत वे सारे उपाय आते हैं जिनका प्रयोग मनुष्य अपने विवेक से जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए करता है। बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए मनुष्य अधिक उम्र में विवाह करना, संयम, ब्रह्मचर्य का पालन करना और संतति निग्रह के कृत्रिम साधनों के द्वारा जनसंख्या को रोका जा सकता है। और दूसरा (II) प्राकृतिक अवरोध (Positive checks):- इन उपायों के अन्तर्गत अकाल, महामारी, भूकम्प, सूखा, युद्ध, इत्यादि आते हैं। मालथस के अनुसार मनुष्य यदि कृत्रिम उपायों के द्वारा जनसंख्या को रोकने का प्रयास नहीं करेगा तो प्राकृतिक नियम के अनुसार अकाल, महामारी, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक रोग स्वयं क्रियाशील हो जायेंगे जिससे जनसंख्या स्वतः कम हो जायेगी और साथ-साथ मानव समाज को अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ेगा। अतः मालथस के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए प्रतिबंधक उपायों (Preventive checks) का ही प्रयोग में लाना चाहिए।

Brajesh Pathak
Asso. Prof. Economics.
R.H.S. College Singhara. 19/06/21

~~30/9/20~~

दिनांक 19/06/21 "अर्थशास्त्र" शास्त्री-II SHASTRI-II संस्कृत शास्त्री प्रथम 2020

Qus:→ माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

Ans:→ हम जानते हैं कि श्रम उत्पादन का एक प्रमुख एवं अनिवार्य साधन है। किसी देश में श्रम की पूर्ति वहाँ की जनसंख्या पर निर्भर करती है क्योंकि उत्पादन बहुत कुछ श्रम शक्ति पर निर्भर करता है। इसलिए उत्पादन के दृष्टिकोण से माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की जानकारी परम आवश्यक है। T. R. Malthus England के अर्थशास्त्री थे। माल्थस ने जनसंख्या संबंधी अपने विचारों को 1798 ई० में "An Essay on the principles of Population" नामक पुस्तक में प्रकाशित किया। जिस समय इनकी पुस्तक प्रकाशित हो रही थी, उस समय England की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही थी। जिससे लोगों के जीवन स्तर निरंतर गिरते जा रहा था। चूँकि माल्थस एक निराशावादी अर्थशास्त्री थे, अतएव जनसंख्या के भयानक दुष्परिणामों एवं संकटमयी स्थिति से लोगों को बचाने के लिए जनसंख्या के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत तीन प्रमुख तथ्यों पर आधारित हैं:—

① जनसंख्या की वृद्धि:→ माल्थस के सिद्धांत के पहले भाग का संबंध श्रम की पूर्ति से है। माल्थस कई देशों की जनसंख्या का गहन अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी भी देश की जनसंख्या में बहुत तेजी के साथ बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है। इनके अनुसार मनुष्य में सन्तानोत्पत्ति की शक्ति अपार होती है इसलिए यदि इस प्रवृत्ति में किसी प्रकार की रुकावट न हुई तो किसी देश की जनसंख्या में जीवन निर्वाह के साधनों की अपेक्षा अधिक तीव्रता के साथ वृद्धि होती है। माल्थस के अनुसार "किसी देश की जनसंख्या ज्यामितीय रीति यानी 1, 2, 4, 8, 16, 32 के हिसाब से बढ़ती है और भोजन में वृद्धि अंकगणितीय दर 1, 3, 5, 7, 9, 11 के दर से होती है। इस प्रकार यदि देश की जनसंख्या की वृद्धि (Growth) में कोई रुकावट न होतो 25 वर्षों में प्रायः यह दोगुनी हो जायेगी।" ② खाद्य सामग्री में वृद्धि:—माल्थस के अनुसार—"मानवीय प्रयत्नों के उपलक्ष्य में प्रकृति द्वारा जो खाद्य सामग्री उपलब्ध होती है, उनके द्वारा श्रम की माँग निर्धारित होती है। (The Produce which nature returns to the work of man is the effective demand for population.) मनुष्य को जीवित रखने के लिए भोजन अनिवार्य है अतएव किसी देश की जनसंख्या की सीमा वहाँ पर उपलब्ध खाद्य सामग्री या जीवन निर्वाह साधनों द्वारा निर्धारित होती है।

माल्थस ने कहा कि जिस गति से जनसंख्या बढ़ती है उस गति से खाद्य सामग्री नहीं बढ़ती है। इनके अनुसार भोजन का उत्पादन अंकगणितीय प्रणाली यानी 1, 2, 3, 4, 5, 6 के हिसाब से बढ़ता है इसका प्रमुख कारण कृषि में कृषि उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को बतलाया। इस प्रकार माल्थस के अनुसार जनसंख्या में जीवन निर्वाह के साधनों की अपेक्षा अधिक बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है P. T. O ⟶